जाने वो वक़्त कैसा होगा

प्रतीक भाटिया

जाने वो वक़्त कैसा होगा

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-81-19927-00-5

Price: ₹ 249.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher

Printed in India

जाने वो वक़्त कैसा होगा

प्रतीक भाटिया

कवि परिचय

प्रतीक भाटिया आज कल शिक्षा के क्षेत्र में थापर यूनिवर्सिटी के कम्प्यूटर साईंस विभाग में कार्यरत हैं। पर सोचता हूँ कि यह कवि का वास्तिवक परिचय नहीं होगा क्योंकि, जब इन कविताओं ने जन्म लिया, तब यह प्रतीक था ही नहीं। कई बार लगता है कि हम एक ही जिंदगी में कई जीवन जी लेते हैं। अब यादों के चक्र में पीछे जाकर लगता ही नहीं वो बिताया हुआ बचपन भी इसी जीवन का हिस्सा था। वो जवानी के लड़कपन और सपनों की अपनी दुनिया में रहने वाला नौजवान, लगता ही नहीं कि मैं ही था।

आज के वास्तविक जीवन में स्पर्धा और मान की दौड़ में लगे हर इंसान के साथ, जब खुद को भी दौड़ता देखता हूँ, तो अहसास करता हूँ कि नटखट बचपन और सपनों की दुनिया में रंगी जवानी का मस्त जीवन जी लिया गया है और पाता हूँ कि कल का कवि आज के गंभीर ''प्रतीक भाटिया'' में बदल चुका है। सो कवि आज का प्रतीक है ही नहीं। यह तो वो शख्स है जो सपनों की दुनिया में रहता है, ज़माने के दस्तूरों से परेशान है, और जो मुमकिन नहीं लगता उसे मुमकिन करने की रोज़ नाकाम कोशिश करता है।

उसी कवि की कृतियों को किताब में समावेश कर आज का प्रतीक उस नायाब जीवन को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

किताब परिचय

जिंदगी के सबसे हसीन रंग प्यार में रंगी इन कविताओं का जन्म लगभग दो दशक पहले हुआ। आभारी हूँ आपका कि आपने इस किताब को हाथ में लिया और आशा करता हूँ कि इन कविताओं को पढ़ कर आपको भी कोई अपना याद तो जरूर आएगा।

आभार

दो दशक पहले लिखी हुई कविताओं को सार्वजनिक करने का निर्णय आसान न था। इस निर्णय तक पहुँचने के लिए मैं आभारी हूँ, विश्व विख्यात लेखक रोबिन शर्मा जी का, जिनकी लिखी किताबों ने मुझे प्रेरणा दी कि कोई ख्वाब को अधूरा नहीं छोड़ना चाहिए और उसे पूरा करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए, वर्ना मृत्यु शैय्या पर पड़े हम सोचेंगे कि जिंदगी में यह काम अधूरा रह गया। लोग क्या सोचेंगे, से बड़ी यह सोच है कि आप क्या सोचते हैं।

आभारी हूँ मैं अपनी पत्नी सनमीत कौर का जो जीवन अर्धांगिनी हैं। मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे उनके जैसा जीवन साथी मिला, जिन्होंने मुझे इस किताब के ख्वाब को पूरा करने के लिए प्रेरित किया। उनके साथ के बिना यह कभी मुमकिन न होता और यह ख़्वाब, ख़्वाब ही रह जाता। आभारी हूँ मैं उनके साथ का जिसने जीवन को बदल दिया और खुशियों व सुकून से भर दिया। आभारी हूँ मैं उनके माता–पिता जी का (जो कि अब मेरे हैं), जिन्होंने अपनी इस अनमोल धरोहर को हमारे घर की धरोहर बना दिया।

जीवन कैसे जिया जाए, हमारा बर्ताव दूसरों के साथ कैसा है, कैसे भरपूर जिन्दगी व्यतीत करनी है? जैसे हम बड़े होते हैं, यह सवाल सबसे ज्यादा वास्तविक लगने लगते हैं। आभारी हूँ मैं भगवान का, जिन्होंने वेद कुमार जी के घर मुझे जन्म दिया। उनका व्यक्तित्व इतना महान है कि उनके जीवन को सामने रखकर आपको सीखने के लिए किसी और चीज की जरूरत ही नहीं पड़ती। मेरी माँ

जगदीश भाटिया, जिन्होंने अपने प्यार से हमारे परिवार को रंग दिया, जिनकी आँखें प्यार में सदा नम रहती हैं, जिन्दगी को सुकूनमय बनाने के लिए मैं उनका आभारी हूँ।

आभारी हूँ मैं अपने बेटों राहत और रिशान का, जो अतीत को छोड़ आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। जो चिंताओं को दूर करते हैं और आनन्द का अहसास करवाते हैं।

आभारी हूँ मैं स्वर्गीय राष्ट्रपति ए.पी.जे.अब्दुल कलाम जी का, जिनका जीवन प्रेरणा देता है कि जो सीखा है दूसरों के साथ बांटने को, जो लिया है दूसरे के साथ सांझा करने को और अपने समाज, राष्ट्र, विश्व और प्रकृति के लिए कुछ करने को।

आभारी हूँ मैं आर्ट ऑफ लीविंग और सहज मार्ग का, जिनके विचार जीवन को सही दिशा देते रहते हैं।

आभारी हूँ मैं उस भगवान का, जिसने जीवन में यह सब कुछ दिया और दिखाया। भगवान द्वारा रची घटनाओं का, जिसने जीवन के कायदों को समझाया और इस दुनिया के अहसासों को समझने का मौका दिया। जीवन को इस तरह से घटा, कि उसी दौरान उसने इन कविताओं को लिखने की प्रेरणा और जरूरत दी। जिसने जिंदगी को कई करवटें दी, और हर मुकाम से कुछ सिखाते हुए इस मुकाम पर ला दिया। पता नहीं जीवन रूपी रहस्य में और क्या कुछ बाकी है।

आशा करता हूँ कि हम जीवन रूपी किताब के पन्ने इसी मजे से रोज पढ़ते रहेंगे। कभी खुशी और कभी गम के लम्हों से रोज सीखते रहेंगे और अपना एक अंश जाते–जाते इस जहान पर छोड़ जाएँगे।

आभारी हूँ, मैं अपने भाई सुनीत का जिन्होंने जीवन की इस उठक–पठक में हमेशा साथ दिया। आभारी हूँ भाभी जी डिम्पल, रूही और रहमत का, हमारे परिवार को खुशियों से महकाने के लिए।

आभारी हूँ, मैं भाई हरमन और भाभी जी तरन का, दीदी नवरत्न और जीजू हरकीरत का, जिनका साथ सनमीत के साथ के कारण मिला और जिन्होंने हमारे परिवार को सम्पूर्ण कर दिया। आभारी हूँ मैं सरू और मिट्ठू का, जिन्होंने परिवार को स्नेह से भर दिया।

आभारी हूँ मैं आपका, जिन्होंने अपने हाथ में इस किताब को लिया। जीवन के सबसे हसीन रंग प्यार में रंगी इन कविताओं के माध्यम से दावा करता हूँ कि इनको पढ़ कर आपको भी कोई अपना याद तो जरूर आएगा। यह किताब आपके उसी अपने के नाम जिसे आप याद करेंगे इन कविताओं के जरिए।

आपका अपना,

''प्रतीक भाटिया''

मेरी ज़िन्दगी मेरा प्यार है तू,
कैसे भूलूँ कि मेरा अतीत है तू,
मिटाने से भी जो मिट ना पाए,
इस चंदा पे लगे वो निशान है तू,
मेरी ज़िन्दगी मेरा प्यार है तू !!

जब तक तुम्हें देख न लूँ,
दिल को करार आता नहीं,
किसे क्या मालूम हमें भी नशे की
आदत है !!

मैं धन्यवादी हूँ अपनी पत्नी सनमीत का जिन्होंने भी अपनी लिखी कविताओं को इसमें शामिल किया ।

– प्रतीक भाटिया

कविता– सूची

क्र.	विषय	पृष्ठ क्र.
01	रिश्ता	01
02	प्यार	02
03	याद	04
04	ख़्वाब	06
05	काश	08
06	ज़िन्दगी	09
07	प्यार	11
08	खुले शेयर	13
09	अंधेरे	14
10	जाने वो वक़्त कैसा होगा	15
11	कसम	17
12	तड़पा न इतना	19
13	पड़ाव	21
14	समय	22
15	यादों का दामन	23
16	अहसास	25
17	वो	26
18	खुदा जैसा	28
19	आत्म ज्ञान	30
20	ज़माना	31
21	दुआ	33

22	बेवफ़ा	34
23	खुले शेयर	35
24	दिल की तन्हाई	36
25	अनजाने में	37
26	दस्तूर	39
27	वक़्त	40
28	ग़म	41
29	प्यार का दिया	42
30	तमन्ना	44
31	तुमको नहीं है भूला पाते	45
32	खुले शेयर	47
33	कैसा वक़्त	48
34	तेरे जाने के बाद	49
35	खुले शेयर	50
36	आखिर क्यों	51
37	तन्हाई की महफिल	53
38	गुनाह	55
39	मोड़	56
40	खुदा	58
41	मेरे कुछ पसंदीदा शेयर	60
42	तुझको भूल न सका	63
43	देवता हो तुम	64
44	ये दिल	65
45	तेरी सोच	66

46	खुले शेयर	67
47	बदनाम	68
48	ऐसे ही ख़्वाब	69
49	तलाश	70
50	तेरे बारे में	71
51	इज़हार	72
52	एक अनजाना पत्र	73

रिश्ता

हर रिश्ते का हो नाम कोई, जरूरी तो नहीं,
हर फूल का हो बाग कोई, जरूरी तो नही !!

ज़माने ने मुझ पर लगाए इल्जाम बहुत,
पर इल्जाम के लिए हो गुनाह कोई, जरूरी तो नहीं,
हर रिश्ते का हो नाम कोई, जरूरी तो नहीं !!

बेगाना होके भी वो अपनों सा लगता है,
पर उसके अपनों में हो जिक्र मेरा, जरूरी तो नहीं,
हर रिश्ते का हो नाम कोई, जरूरी तो नहीं !!

मुद्दत बाद वो, पुराने जख़्मों को देखने आया,
पर हर जख़्म का हो निशान कोई, जरूरी तो नहीं,
हर रिश्ते का हो नाम कोई, जरूरी तो नहीं !!

जाने वो वक़्त कैसा होगा

जिंदगी के सबसे हसीन रंग 'प्यार' में रंगी इन कविताओं का जन्म लगभग दो दशक पहले हुआ। इन कविताओं को सावर्जनिक करने का निर्णय आसान नहीं था। इसके लिए धन्यवादी हूँ मैं अपनी पत्नी सनमीत कौर का, जिन्होंने मुझे इस किताब के लिए प्रेरित किया और अपनी लिखी कविताओं को भी इसमें शामिल किया ।

मैं आभारी हूँ आपका कि, आपने इस किताब को हाथ में लिया और आशा करता हूँ कि, इन कविताओं को पढ़ कर आपको भी कोई अपना याद जरूर आएगा।

लेखक के बारे में

प्रतीक भाटिया आज कल शिक्षा के क्षेत्र में थापर यूनिवर्सिटी के कम्पयूटर साईंस विभाग में कार्यरत हैं। पर सोचता हूँ कि, यह कवि का वास्तिवक परिचय नहीं होगा क्योंकि, जब इन कविताओं ने जन्म लिया, तब यह प्रतीक ऐसा था ही नहीं। कई बार लगता है कि, हम एक ही जिंदगी में कई जीवन जी लेते हैं। अब यादों के चक्र में पीछे जाकर लगता ही नहीं कि, वो बिताया हुआ बचपन भी इसी जीवन का हिस्सा था। वो जवानी के लड़क्पन और सपनों की अपनी दुनिया में रहने वाला नौजवान, लगता ही नहीं कि, मैं ही था। कल का कवि आज का गंभीर इन्सान बन चुका है। उसी कवि की कृतियों को किताब में समावेश कर आज का प्रतीक, उस नायाब जीवन को याद करता है।

लेखक से संपर्क हेतु :
parteek.bhatia@gmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-81-19927-00-5
9 788119 927005